साधु और चूहा

महिलरोपयम नामक एक दक्षिणी शहर के पास भगवान शिव का एक मंदिर था। वहां एक पवित्र ऋषि रहते थे और मंदिर की देखभाल करते थे। वे भिक्षा के लिए शहर में हर रोज जाते थे, और भोजन के लिए शाम को वापस आते थे। वे अपनी आवश्यकता से अधिक एकत्र कर लेते थे और बाकि का बर्तन में डाल कर गरीब मजदूरों में बाँट देते थे जो बदले में मंदिर की सफाई तथा सजावट का काम किया करते थे।

उसी आश्रम में एक चूहा भी अपने बिल में रहता था और हर रोज कटोरे में से कुछ न कुछ भोजन चुरा लेता था।

जब साधु को एहसास हुआ कि एक चूहा भोजन चोरी करता है तो उन्होंने इसे रोकने के लिए सभी तरह की कोशिशें की। उन्होंने कटोरे को काफी उचाई पर रखा ताकि चूहा वहां तक पहुँच न सके, और यहां तक कि एक छडी के साथ चूहे को मार भगाने की भी कोशिश की, लेकिन चूहा किसी भी तरह कटोरे तक पहुंचने का रास्ता ढूंढ लेता और कुछ भोजन चुरा लेता था।

एक दिन, एक भिक्षुक मंदिर की यात्रा करने के लिए आये थे। लेकिन साधु का ध्यान तो चूहे को डंडे से मारने में था और वे भिक्षुक से मिल भी नहीं पाए, इसे अपना अपमान समझ भिक्षुक क्रोधित होकर बोले आपके आश्रम में फिर कभी नहीं आऊंगा क्योंकि लगता है मुझसे बात करने के अलावा आपको अन्य काम ज्यादा महत्वपूर्ण लग रहा है।"

साधु विनम्रतापूर्वक चूहे से जुडी अपनी परेशानियों के बारे में भिक्षुक को बताते हैं, कि कैसे चूहा उनके पास से भोजन किसी न किसी तरह से चुरा ही लेता है, "यह चूहा किसी भी बिल्ली या बन्दर को हरा सकता है अगर बात मेरे कटोरे तक पहुंचने कि हो तो! मैंने हर कोशिशें की हैं लेकिन वो हर बार किसी न किसी तरीके से भोजन चुरा ही लेता है।

भिक्षुक ने साधु की परेशानियों को समझा, और सलाह दी, "चूहे में इतनी शक्ति, आत्मविश्वास और चंचलता के पीछे अवश्य ही कुछ न कुछ कारण होगा"।

मुझे यकीन है कि इसने बहुत सारा भोजन जमा कर रखा होगा और यही कारण है कि चूहा अपने आपको बडा समझता है और इसी से उसे ऊँचा कूदने कि शक्ति मिलती है।

चूहा जानता है कि उसके पास कुछ खोने के लिए नहीं है इसलिए वो डरता नहीं है।”
इस प्रकार, साधू और भिक्षुक निष्कर्ष निकालते है कि अगर वे चूहे के बिल तक पहुंचने में सफल होते है तो वे चूहे के भोजन के भंडार तक पहुंचने में सक्षम हो जाएंगे। उन्होंने फैसला किया कि अगली सुबह वो चूहे का पीछा करेंगे और उसके बिल तक पहुंच जाएंगे।
अगली सुबह वो चूहे का पीछा करते हैं और उसके बिल के प्रवेश द्वार तक पहुंच जाते है। जब वो खुदाई शुरू करते है तो देखते हैं की चूहे ने अनाज का एक विशाल भंडार बना रखा है, फौरन ही साधु ने सारा चुराया गया भोजन एकत्र करके मंदिर में लेजाने को कहा है।
वापस आने पर अपना सारा अनाज गायब देख चूहा बहुत दुखी हुआ और उसे इस बात से गहरा झटका लगा और उसने सारा आत्मविश्वास खो दिया।
अब चूहे के पास भोजन का भंडार नहीं था, फिर भी उसने फैसला किया कि वो फिर से रात को कटोरे से भोजन चुराएगा। लेकिन जब उसने कटोरे तक पहुँचने की कोशिश की, तब वह धडाम से नीच गिर गया और उसे यह एहसास हुआ कि अब न तो उसके पर शक्ति है, और न ही आत्मविश्वास।
उसी समय साधु ने भी छडी से उसपर हमला किया। किसी तरह चूहे ने अपनी जान बचायी और भागने में कामयाब रहा और फिर वापस मंदिर कभी नहीं आया।
"यदि हमारे पास संसाधनों की कमी न हो तो हम मे भी अद्भुत शक्तियां और आत्मविश्वासकमी कभी नहीं आ सकती।"

साधु और चूहा

महिलारोप्यम नामक एक दक्षिणी शहर के पास भगवान शिव का एक मंदिर था। वहां एक पवित्र ऋषि रहते थे और मंदिर की देखभाल करते थे। वे भिक्षा के लिए शहर में हर रोज़ जाते थे, और भोजन के लिए शाम को वापस आते थे। वे अपनी आवश्यकता से अधिक एकत्र कर लेते थे और बाकि का बर्तन में डाल कर गरीब मजदूरों में बाँट देते थे जो बदले में मंदिर की सफाई तथा सजावट का काम किया करते थे।

उसी समय में एक चूहा भी अपने बिल में रहता था और हर रोज़ कटोरे में से कुछ न कुछ भोजन चुरा लेता था।

जब साधु को एहसास हुआ कि एक चूहा भोजन चोरी करता है तो उन्होंने उसे रोकने के लिए सभी तरह की कोशिश की। उन्होंने कटोरे को काफी ऊँचाई पर रखा ताकि चूहा वहां तक पहुँच न सके, और यहां तक कि एक छड़ी के साथ चूहे को मार भगाने की भी कोशिश की, लेकिन चूहा किसी भी तरह कटोरे तक पहुँचने का रास्ता ढूंढ लेता और कुछ भोजन चुरा लेता था।

एक दिन, एक भिक्षुक मंदिर की यात्रा करने के लिए आया था। लेकिन साधु का ध्यान तो चूहे के डंडे से मारने में था और वे भिक्षुक से मिल भी नहीं पाए, इसे अपना अपमान समझ भिक्षुक क्रोधित होकर बोले "आपके आश्रम में कभी नहीं आऊँगा क्योंकि लगता है आपको अतिथि सत्कार करने के अलावा आपके अन्य काम ज्यादा महत्वपूर्ण लग रहा है।"

साधु विनम्रतापूर्वक चूहे से संबंधी अपनी परेशानियों के बारे में भिक्षुक को बताते हैं, कि कैसे चूहा उनके पास से भोजन किसी न किसी तरह से चुरा ही लेता है, "यह चूहा किसी भी बिल्ली या बन्दर को हरा सकता है अगर बात भोजन कटोरे तक पहुँचने की हो। मैंने हर कोशिश की है लेकिन वह हर बार किसी न किसी तरीके से भोजन चुरा ही लेता है।"

भिक्षुक ने साधु की परेशानियों को समझा, और सलाह दी, "चूहे में इतनी शक्ति, आत्मविश्वास और चपलता के पीछे अवश्य ही कुछ न कुछ कारण होगा"।

मुझे यकीन है कि इसने बहुत सारा भोजन जमा कर रखा होगा और यही कारण है कि चूहा अपने आपको बड़ा समझता है और इसी से उसे इतनी कूदने कि शक्ति मिलती है। चूहा जानता है कि उसके पास कुछ खोने के लिए नहीं है इसलिए वह डरता नहीं है।"

इस प्रकार, साधु और भिक्षुक निष्कर्ष निकालते हैं कि अगर वे चूहे के बिल तक पहुँचने में सफल होते हैं तो वे चूहे के भोजन के भंडार तक पहुँचने में सक्षम हो जाएंगे। उन्होंने फैसला किया कि अगली सुबह वे चूहे का पीछा करेंगे और उसके बिल तक पहुँच जाएंगे।

अगली सुबह वे चूहे का पीछा करते हैं और उसके बिल के प्रवेश द्वार तक पहुँच जाते हैं। जब वे खुदाई शुरू करते हैं तो देखते हैं कि चूहे ने अनाज का एक विशाल भंडार बना रखा है, इसी दौरान ही साधु ने सारा चुराया गया भोजन एकत्र कर के मंदिर में लौटाने को कहा है।

वापस आने पर अपना सारा अनाज गायब देख चूहा बहुत दुखी हुआ और उसे इस बात से गहरा सदमा लगा और उसने सारा आत्मविश्वास खो दिया।

अब ग्रह के पास ईंधन का भंडार नहीं था, फिर भी उसने फैसला किया कि वह फिर से रोबोट के केंद्र से ईंधन ग्रहण करेगा। लेकिन जब उसने केंद्र तक पहुँचने की कोशिश की, तब वह पहाड़ से नीचे गिर गया और उसे एहसास हुआ कि अब न तो उसके पास शक्ति है, और न ही बुद्धिमत्ता।

उसी समय सायरन ने भी ऊर्जा से उसपर हमला किया। किसी तरह ग्रह ने अपनी एक बलशाली और हथियार से के भयाग रहा और फिर वापस सादिर कभी नहीं आया।

"यदि हमारे पास संसाधन की कमी न हो तो भी अच्छे साथियों और बुद्धिमत्ता की कमी कभी नहीं हो सकती।"

अनुवाद - विमल कौल एला